RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-08
August-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# सीमोन दी बोउवार व स्त्री विमर्श की अवधारणा

नीरजा सिंह (शोधार्थी)

*८३, बाल विहार कॉलोनी, जोशी मार्गके पास, कालवार रोड, झोटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान*

---

9 जनवरी 1908को सीमोनका जन्म पेरिस के एक मध्यवर्गीय कैथोलिक परिवार में हुआ था | पहली संतान होने के कारण उन्हें माता-पिता का भरपूर स्नेह मिला | 1925-26 में सीमोन ने दर्शनवगणित में स्कूल की परीक्षा पास की |1925में सोरबोर्न के विश्वविद्यालय में उन्होंने दर्शन व साहित्य का कोर्स शुरू किया | यह 1947 का वर्ष था सीमोन ने महान ग्रंथ 'दी सेकंड सेक्स'पर काम शुरु किया |1947 में दर्शन की एकमात्र पुस्तक 'ीथीवस ऑफ़ एम्बिगुइटी'का प्रकाशन हुआ जो कि मानव मूल्यों पर एक गुंथा हुआ दार्शनिक दस्तावेज है | 1949 में 'दी सेकंड सेक्स'प्रकाशित हुआ |19 अप्रैल 1986 को सीमोन की मृत्यु हुई|

सीमोन को पढ़ते हुए औरत की एक सही और इमानदार तस्वीर आंखों में तैरती है | समझ में आता है कि हम अकेले औरत होने के दर्द व त्रासदी को नहीं झेल रही है | यह भी लगता है किसीमोन की चेतना को सार्त्र ने ताकत दी |सीमोन कहती है - "स्त्री कहीं झुंड बनाकर नहीं रहती , वह पूरी मानवता काआधा हिस्सा होते हुए भी पूरी एक जाति नहीं , गुलाम अपनी गुलामी से परिचित है और एककाला आदमी अपने रंग से | पर स्त्री घरों, अलग-अलग वर्गों एवं विभिन्न जातियों में बिखरी हुई है | उसमें क्रांति की चेतना नही क्योंकि अपनीं स्थिति के लिए वह खुद जिम्मेदार है, वह पुरुष की सह अपराधिनी है|अतः समाजवाद कीस्थापना मात्र से स्त्री मुक्त नहीं हो जाएगी | समाजवाद भी पुरुष की सर्वोपरिता की ही विजय बन जाएगी |"[1]

स्त्री की स्थिति अधीनस्थता कि है यह बात सीमोन बड़े स्पष्ट रूप में कहती है | स्त्री के अधीनस्थ होने के कारणों की व्याख्या वे जीव विज्ञान , मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और जातीय इतिहास आदि सभी दृष्टिकोणों से व्यापक एवं गंभीर रूप से करती हैं |

सीमोन ने अपनी पुस्तक के प्रथम खंड की शुरुआत में औरतों को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है | वह कहती है - "औरत एक गर्भ है, अंडाशय है और एक औरत है | यह शब्द काफी है उसको परिभाषित करने के लिए | पुरुष केमुंह से औरत शब्द एक अपमानजनक ध्वनि रखता है | स्त्री व पुरुष दो प्रकार के प्राणी है जो मानव जाति में प्रजनन की प्रक्रिया के आधार पर विभाजित होते हैं |"[2]सीमोन का मानना है कि उन्हें एक-दूसरे के संदर्भ में ही परिभाषित किया जा सकता है | यही से हमें सीमोन का स्त्रीवादी चिंतन दिखाई पड़ता है , जहांवह स्त्री व पुरुष को अलग-अलग परिभाषित ना कर उन्हें एक दूसरे के संदर्भ में ही परिभाषित करने का प्रयत्न करती है |

सीमोन कहती है कि स्त्री-पुरुष के बीच शारीरिक भिन्नता के अतिरिक्त कोई स्थाई भिन्नता संभव नहीं है | तमाम दुराग्रहों के बावजूद शारीरिक भिन्नता के आधार पर स्त्री पुरुष में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा एवंविद्वेष का कोई स्थाई क्षेत्र नहीं माना जा सकता |

'द सेकेंड सेक्स' के प्रथम खंड के प्रथम भाग में 'एक: नियति' में स्त्री की जैविक स्थिति , मनोवैज्ञानिक पहलू व उसकेप्रति ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण पर विचार किया गया है | स्त्री के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डालती हुई वह कहती है कि "औरत ही अपनी प्रकृति की परिभाषा अपने भावात्मक जीवन की प्रवृतियों के माध्यम से करती है | वह इस जगत में अपने शरीर के साथ अवस्थित रहती है | बचपन में छोटी लड़की की घनिष्ठता अपने पिता के साथ होती है,वह उसके साथ एकीकृत होती है, लेकिन साथ ही पुरुष के संदर्भ में उसके मन में एक हीन भावना भी पैदा हो जाती है | वहदुविधा में पड़ जाती है | या तो वह अपनी स्वाधीनता का समर्थन करें और लोगोंकी नजरों मेंएक पौरुषीय मूल्य प्राप्त करें या फिर प्रेम पूर्ण समर्पण में ही सुख का अनुभव करें | और आगे चलकर पुरुष द्वारा दमित होने की क्षति पूर्ति वह मातृत्व की भावना में करती है |"[3]

आगेसीमोन स्त्री के प्रति ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालती है |सीमोन का मानना है कि आर्थिक दमन से उपजे सामाजिक दमन का मूल शिकार औरत हुई | सत्ता के मद में पुरुष तो भोग-विलास में लीन रहने लगा | वह गुलामों पर अत्याचार वह वेश्याओं से व्यभिचार करने लगा |

© RRIJM 2015, All Rights Reserved 

इसी क्रम में बहुसंग वबहुविवाह के अधिकार भी पुरुषों से प्राप्त कर लिए । इस दृष्टिकोण के विरोध में स्त्री अस्मिता की बात करते हुए सीमोनकहती है कि "औरत को केवल सेक्सुअल ऑब्जेक्ट नहीं समझा जा सकता । क्योंकि जैविक विशेषताओं का भी वही तक महत्व है जहां तक वह सक्रिय रूप से ठोस मूल्यों के निर्माण में सहायक होती है। औरत का आत्मबोध उसके सेक्सुअलिटी से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। यह ठीक है कि आदिम काल में पुरुष की अदम्य शक्ति की तुलना में औरत कमजोर सिद्ध होती थी , लेकिन आज तकनीकी विकास ने औरत और पुरुष के इस भेद को मिटा दिया है।"[4]

दूसरे खंड में सीमोनऔरत जाति के प्रारंभ से अब तक के इतिहास को चित्रित करती है । वह मानव जातिके प्रारंभ में स्त्री की स्थिति को लक्षित करते हुए कहती है कि प्राककृषि काल में स्त्री की स्थिति कैसी थी, इससंबंध में अनुमान करना कठिन है, हम इतना भर जानते हैं कि उसको कठिन परिश्रम करना पड़ता था और घर परिवार का ज्यादा बोझ उसी को उठाना पड़ता था । औरत बच्चे को जन्म भर देती थी किंतु सृजन का अभिमान उसमें नहीं जगा था । वह अपने को अदृश्य शक्तियों के हाथ का खिलौना भर समझती थी ।उसके बाद प्रारंभिक कृषि युग में स्त्री शारीरिक कमजोरी के बावजूद पुरुष के इतने अधीनस्थ नहीं थी कि उसकी गुलाम कहलाए । सामूहिक जीवन में व्यभिचार को मान्यता प्राप्त नहीं थी । स्त्री व पुरुष सामूहिक रूप से धार्मिक , सामाजिक व आर्थिक अस्तित्व के सहभागी थे ।विवाह किसी भी रुप में किसी रहस्य में बंधन की कुंजी नहीं था ।ज्यों-ज्योंसमाज का विकास होता गया पुरुष में सत्ता का लोभ बढ़ता गया । फिर स्त्री की नियति हो गईपुरुष की अधीनता ।इसके बाद मातृत्व की महानता को पुरुष ने कुचलना शुरू कर दिया ।

सीमोनपितृसत्तात्मक अवस्था व पारंपरिक विरासत के संदर्भ में स्त्री की स्थिति का वर्णन करती है । यहां आकरस्त्री अबपुरुष की वस्तु हो गई थी । उसका महत्व जमीन के टुकड़े वह गाय बैल से अधिक नहीं रह गया था। संतान कोपिता का नाम मिलने लगा , पिता को पूरा अधिकार था कि वह जहां चाहे बेटी का विवाह करें । पुरुष केलिए बहुविवाह की छूटथी ।यहां सीमोनग्रीक समाज का उदाहरण देते हुए कहती है कि "जहां देवी मां पत्नी होते हुए भी अपनी पूर्ण गरिमा रख पाती थी एवं बताती है कि जहां निजी संपत्ति वजमीन नहीं थी वहां स्त्री को सम्मान व पुरुष के समान अधिकार मिला हुआ था । अब तक का साहित्य और औरत के बारे में सम्मान से लिखता रहा था, किंतु रोमन साहित्य में आकर स्त्री पर खुले व्यंग्य व प्रहार शुरू किए गए ।"[5]

मध्य युग में 18वीं शताब्दी तक फ्रांस में अकेली स्त्री की एक विशिष्ट स्थिति होती थी । एक समृद्धि व्यक्तित्व से संपन्न , पत्नी के बंधन से मुक्त । उसे सारे नागरिक अधिकार प्राप्त थे, किंतु वास्तव में वह अमूर्त व खोखले थे ।

इसी के साथ सीमोनस्त्री दमन की इस प्रक्रिया में ईसाइयत की भागीदारी को भी बताती है । ईसाइयत ने औरत के दमन की प्रक्रिया को कम बढ़ावा नहीं दिया बाइबल में औरतों व कोढ़ियों पर समान दयाभावरखने को कहा गया है । प्रारंभिक ईसाई सभ्यता के समय औरतों को चर्च से काफी चर्चा मिली और वह पुरुषों के समान ही ईसाई धर्म के प्रचार में शहीद भी हुई । किंतु पूजा में हमेशा उनका स्थान पुरुषों की तुलना मेंगौण रखा गया ।स्त्री विरोधी यहूदी परंपरा संत पॉल के द्वारा स्त्रियों पर आरोपित की गई। उन्होंने पुराने औरनए-नए टेस्टामेंट में औरत को पुरुष के अधीन रखा । वह कहते हैं "पुरुष औरत के लिए नहीं बना है औरत बनी है पुरुष के लिए।"[6]अन्य स्थान पर कहते हैं कि "जैसे चर्च के स्वामी यीशु है, वैसे स्त्री के स्वामी पुरुष है, यह धर्म स्थूल मांसलता को घिनौना मानता , था अतः औरत उसके लिए शैतान की खालाथी । टरटूलियन लिखते हैं कि "औरत तुम शैतान की खाला हो, जहां शैतान सीधा आक्रमण करने में हिचकता है , वहां वह औरत का सहारा लेकर पुरुष को मिट्टी में मिला देता है। यह तो औरत की गलती है जिससे प्रभु के पुत्र को मरना पड़ा ।"[7]वह कहते हैं कि आदमी को पाप के रास्ते हौव्वा ले जाती है, ना किहौव्वा को आदमी। इसी तरह धर्म ने स्त्री को सदैव पुरुष की तुलना में गौण रखा।

फ्रांस की स्त्री के पास स्वतंत्रता तो थी पर वह न आर्थिक स्वायत्तता की स्वतंत्रता थी न सामाजिक सम्मान की । ज्यादातर वयस्क कुमारिया पारिवारिक छाया में जीवन गुजार देती थी, या फिर आजीवन धार्मिक मठों में रह जाती थी । अगर वह कहीं स्वाधीनता महसूस करती थी तो अवज्ञा व पाप की, ऐसी अवस्था में स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को प्रस्थापित कर पाना असंभव था ।

सीमोन बताती है कि फ्रांस की राज्यक्रांति में स्त्री की स्थिति में बुनियादी परिवर्तन की आशा की गई थी । परंतु यहस्वतंत्रता एक प्रकार की अराजकता से भरपूर थी । समाज का पुनर्गठन शुरू होने पर परिवार की संरचना में औरत को पुनः बंदी बना दिया गया। नारी स्वाधीनता की दृष्टि से फ्रांस

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

दूसरे देशों से आगे जरुर था , किंतु दुर्भाग्यवश आधुनिक फ्रांसीसी महिलाओं की स्थिति पर सबसे बुरा असर पड़ा कोड नेपोलियन का | जिसने उनको सदियों दासता में जकड़े रखा | तलाक की प्रथा को बंद कर दिया गया, विवाहित स्त्री के लिए पति की आज्ञा ही सर्वोपरि होती थी | विवाहेतर संबंध कायम करने पर पति स्त्री को कमरे में बंदिनी बना सकता था , तलाक दे सकता था, यदि मैं क्रोध में उसकी जान भी ले लेता तो कानून उसे माफ़ कर देता था | हां अगर पति व्यभिचार करें तो पत्नी केवल तलाक की अर्जी दे सकती |थी इस तरह विविध खोखली स्वतंत्रता के बावजूद वहां स्त्री केवल गुलाम थी |

सीमोन बताती है कि इतिहास इस बात का साक्षी है कि आदि काल से ही परिवार का गृह स्वामित्व आयु की दृष्टि से श्रेष्ठ पुरुष के हाथ में रहते आया है | उसने स्त्री को हमेशा परावलंबी बनाए रखा | कानून में भी स्त्री को पुरुष के नीचे के स्तर पर रखा | स्त्री को पुरुष वर्ग से भिन्न एवं निम्न प्राणी की कोटि में रखी गई | इस व्यवस्था नेन केवल पुरुषों को आर्थिक विशेषाधिकार दिए , बल्कि उसके मिथ्यादार्शनिक व नैतिक विचारों की भी पुष्टि हुई |पुरुष अपने स्वत्व की स्थापना करना चाहता है , स्त्री उसे सीमित रखती है , अस्वीकार करती है किंतु वह पुरुष की आवश्यकता है | उसके ही माध्यम से पुरुष पूर्णता को प्राप्त करता है , संघर्ष के दौर में स्त्री पुरुष की इच्छा के प्रति समर्पण करती है , उसे समांगीकरण की अनुमति देती है | पुरुष उसका विनाश कर उस पर आधिपत्य जमाता है | उदाहरण देते हुए सीमोन बताती है कि नारी की स्थिति इतिहास में कभी एक ही नहीं रही अनेक बार नारी की स्थिति अन्य श्रेष्ठ व्यक्ति व संस्था द्वारा कमजोर बना दी जाती रही है |चूँकि स्पार्टा की नारियों ने अपने को राज्य को समर्पित कर दिया था , इसलिए उनकी स्थिति अन्य ग्रीक महिलाओं से अच्छी रही फिर भी वह पुरुष के समान स्तर पर कभी नहीं जा सकी |

सीमोन बताती है कि सभी सभ्यताओं के युगों के समान ही आज के युग में भी नारी पुरुष में भय की भावना का संचार करती है |पुरुष ने नारी पर भय पैदा करने का आरोप लगाया है | एक बच्ची से किसी को भय नहीं होता , ना तो उस पर बंधन लगाए जाते हैं , ना उसके चरित्र की पवित्रता पर प्रश्न उठता है | किंतु ज्यों ही उसमेउत्पन्न करने की क्षमता आ जाती है और रजोधर्म शुरू हो जाता है , उस पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं | वह अपवित्र हो जाती है | रजस्वला स्त्री को अपवित्र माना जाता है तथा शक्ति का भंडार माना जाता है जो कि पुरुष की शक्ति को भी नष्ट कर सकती है | पुरुष जब नारी को अपनी संपत्ति के रूप में प्राप्त करता है तो उसकी यही इच्छा रहती है कि नारी केवल देह ही रहे | पुरुष नारी के शरीर में नारी के व्यक्तित्व का विकास देखना नहीं चाहता |

सीमोन विभिन्न देशों का विश्लेषण करते हुए बताती है कि नारी की सुगठित मांसलता पुरुष के आकर्षण का सहज केंद्र होती है | यहां तक कि स्त्रियों की पोशाक व सज्जा के उपकरण भी इस तरह बनाए जाते हैं कि जिससे वह विशेष कार्य न कर सके | चीन की स्त्रियों के पांव आरंभ से ही बंधे रहते हैं जिससे उन्हें चलने में भी कठिनाई होती है | हॉलीवुड की अभिनेत्रियों के नाखूनों पर इतनी गहरी नेलपॉलिश रहती है कि वह हाथ से कार्य करना पसंद नहीं करती | पुरुषऐसी स्त्री को अपनी संपत्ति बनाना चाहते हैं, जो मोटापे के भार से दबी हुई है या इतनी दुर्बल है कि काम करने में असमर्थ है |उसके वस्त्र भी इतने असुविधाजनक हो कि वह काम नहीं कर सकती | मेकअप व आभूषण भी स्त्री को जड़वत बना देते हैं | कुछ समाज ऐसे हैं जहां स्त्री का आभूषण पहनना धार्मिक महत्व रखता है, ताकि वह सजीव नारी से मूर्तिवत हो जाए | नारी अपने शरीर पर पुष्प, नग, सीप, धारण कर पौधा, पशु, हीरा बन जाती है | वह सुगंधित पदार्थ का प्रयोग करती है जिससे उसकी देह से लिली व गुलाब की गंध फैले | यह सब बनावटी उपकरण उसके शरीर को पशुत्व से ढक देते हैं , यह सब भी स्त्री की पराधीनता के ही परिचायक है |

सीमोन बताती है कि मातृत्व का दायित्व ग्रहण करके ही स्त्री अपने शारीरिक भाग्य को पूर्ण करती है |उसकी रचना ही जीवन के नैर्रत्य को बनाए रखने की दृष्टि से की गई है |स्त्री मां बनतेही मां की भूमिका में आ जाती | यह उसके जीवन का एक नया आरंभहोता है | प्रसन्नतापूर्वक स्वेच्छा से गर्भधारण करने वाली स्त्री संतान को कभी बोझ नहीं समझती | पति उससे प्रेम करता है तो वह प्रसन्नतापूर्वक शिशु की देखभाल करती है | सीमोनका मानना है कि गर्भाधान एक प्रकार का नाटक है जो स्त्री के शरीर के भीतर ही खेला जाता है | स्त्री को एक साथ ही संपन्नता वह लूटे जाने का अनुभव होता है, भ्रूण उसके शरीर का एक अंश होता है , भ्रूण एक परजीवी है जो स्त्री से अपना पोषण प्राप्त करता है | वह संतान को अपने वश में रखती है तथा स्वयं संतान द्वारा अधिकृत कर ली जाती है | संतानद्वारा भविष्य में अपने प्रतिनिधित्व की आशा से गर्भ धारण करके स्त्री अपनी सांसारिक महानता का अनुभव करती है | महानता का यह अनुभव स्त्री का विनाश कर देता है, उसे नगण्यता का अनुभव होता है |

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

इन सब बातों से पता चलता है किसीमोन स्त्री की पराधीनता का कारण पुरुष समाज के साथ-साथ सामाजिक , राजनीति , आर्थिक, जैविककारणोंकी विवेचना करती है | उनकामानना है कि स्त्री की वर्तमान पाशविक दशा के लिए यह सभी कारण उत्तरदायी है जो एक और पुरुषको शक्तिमान के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं , दूसरी और स्त्री को निरंतर उसकीगुलामी की ओर धकेलते हैं |

इन सब में स्त्री भी कहीं ना कहीं अपनी स्थिति हेतु उत्तरदायी है | किसी जाति को लगातार हीना अवस्था में रखा जाएगा तो वह हीनहींरहेगी | किंतु साथ ही सीमोन इस सब का हल बताते हुए कहती है कि "मानवी स्वतंत्रता पुरुष व स्त्री की भिन्नता की सीमा को तोड़ सकती है | पहल पुरुषों को करनी होगी कि वह स्त्री को अधिकार दे , उनका उपयोग तो वह स्वयंकरना सीख जाएगी |"

सीमोनमानतीहै कि पुरुष भी औरत की तरह मांस का पिंड ही होता है | उसकी भी अपनी ग्रंथियां होती है , परंतु पुरुष अपने को विजयी बनाना चाहता है |उसकी वैयक्तिकता किसी स्त्री को वस्तु बनाकर भोगने व अधिनस्थ कर लेने की होती है | यदि पुरुष स्त्री को स्वतंत्र बनाने का बीड़ा उठाया तो वह पुरुष के बराबर सामाजिक व आर्थिक समानता पाएगी , जिसके कारण उसकी आंतरिकता में नया रूपांतरण घटित होगा | क्योंकि स्त्री व पुरुष के बीच कुछ मौलिक आधारभूत भेद तो होंगे ही, किंतु यदि समाज स्त्री को सत्ता वस्वायत्तता देता है तो प्रेमपूर्ण स्पर्श भी इस भेद को पिघला सकता है | यह तो पुरुष को ही स्थापितकरना है की दी हुई दुनिया में समानता व स्वाधीनता का आधिपत्य बना रहे | विजय केलिए यह आवश्यक हो जाता है कि स्त्री पुरुष अपने प्राकृतिक विभाजन को बनाए रखते हुए भी आपसी सौहाद्र को स्थापित कर सके | इस तरह सीमोन की स्त्रीवादी सोच व दृष्टिवर्तमान में पूरी तरह प्रासंगिक है व उपयोगितापूर्ण है | वह समाज व जीवन के किसी एक पक्ष को लेकर नहीं चल विभिन्न दृष्टियों , स्थितियों के आधारपर उसकी विवेचना करती है | यही उनके चिंतन की मौलिकता है |

**सन्दर्भ सूची** :

१.दी सेकंड सेक्स, सीमोन-दी-बोउवार,अनुवादक-प्रभा खेतान,स्त्री उपेक्षिता,पृष्ठ सं-२
२. वही, पृष्ठ सं.-१२
३. वही, पृष्ठ सं.-२२
४. वही, पृष्ठ सं.-३९
५. वही, पृष्ठ सं.-७९
६. वही, पृष्ठ सं.-१११
७. वही, पृष्ठ सं.-१११

© RRIJM 2015, All Rights Reserved